वैदिक ज्योतिष में महादशा का वैज्ञानिक आधार

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

भविष्यवाणी की प्रक्रिया का प्रथम चरण जन्मकुंडली के मूल ढाँचे के सूक्ष्म विश्लेषण से प्रारंभ होता है. जन्मकुंडली उस क्षण का खगोलीय चित्रण है, जब व्यक्ति का जन्म हुआ होता है, और इसमें ग्रहों की स्थिति, राशियाँ, भाव तथा उनके पारस्परिक संबंध अंकित होते हैं. यह कुंडली एक स्थिर आधार प्रदान करती है, जिसे जीवन की संभावनाओं का मूल संकेतक माना जाता है. इस स्तर पर यह देखा जाता है कि कौन-सा ग्रह किस भाव में स्थित है, वह किस राशि में स्थित है, और उसकी स्थिति शुभ है अथवा अशुभ. इसी के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि जीवन के कौन-से क्षेत्र प्रमुख रूप से सक्रिय होंगे.

वैदिक ज्योतिष में समय की अवधारणा केवल घटनाओं के क्रमिक प्रवाह का साधारण निरूपण नहीं है, अपितु यह एक गहन दार्शनिक, खगोलीय तथा गणितीय तत्त्व के रूप में स्थापित होती है, जहाँ समय को एक जीवंत, चक्रीय और संरचित सत्ता के रूप में समझा जाता है. भारतीय चिंतन परंपरा में काल को ब्रह्मांड की आधारभूत शक्ति माना गया है, जो सृष्टि, स्थिति और संहार की समस्त प्रक्रियाओं का नियामक है. इसी कारण ज्योतिष, जो वेदांग के रूप में प्रतिष्ठित है, काल के मापन, विभाजन और उसके प्रभावों के विश्लेषण का विज्ञान कहा गया है. महादशा, अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा की संकल्पना इसी काल-तत्त्व के सूक्ष्म विभाजन का परिणाम है, जिसके माध्यम से मानव जीवन की घटनाओं को समय के विभिन्न स्तरों पर समझने का प्रयास किया जाता है.

यदि समय को वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो यह निरंतर प्रवाहित होने वाला एक आयाम है, जिसे खगोलीय गतियों के माध्यम से मापा जाता है. पृथ्वी का घूर्णन दिन-रात का निर्माण करता है, सूर्य की परिक्रमा वर्ष का निर्माण करती है, और चन्द्रमा की गति मास तथा नक्षत्रीय चक्र को निर्धारित करती है. वैदिक ज्योतिष ने इन खगोलीय गतियों को केवल भौतिक घटनाओं के रूप में नहीं देखा, बल्कि इन्हें जीवन के अनुभवों के साथ जोड़कर एक सांकेतिक प्रणाली विकसित की. इस प्रकार समय का मापन केवल गणना नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण व्याख्या का माध्यम बन गया.

नक्षत्र प्रणाली इस संपूर्ण व्यवस्था का आधार है. सत्ताईस नक्षत्र, जो आकाशीय पथ के स्थिर बिंदुओं के रूप में माने जाते हैं, चन्द्रमा की गति के संदर्भ में समय के विभाजन का कार्य करते हैं. प्रत्येक नक्षत्र एक निश्चित विस्तार का होता है और चन्द्रमा प्रतिदिन लगभग एक नक्षत्र को पार करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि नक्षत्र प्रणाली वास्तव में चन्द्र-आधारित कालमापन की एक अत्यंत सटीक पद्धति है. इस प्रणाली में चन्द्रमा को इसलिए विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि वह पृथ्वी के निकटतम खगोलीय पिंड है और उसकी गति मानव जीवन के अनुभवों के साथ अधिक प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई मानी गई है.

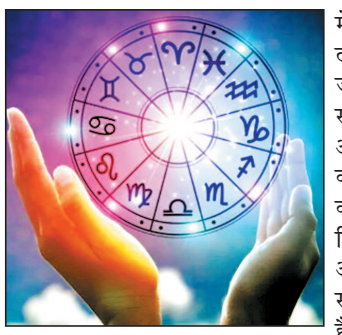

महादशा प्रणाली का प्रारंभ इसी नक्षत्रीय स्थिति से होता है. जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में स्थित होता है, वही उस व्यक्ति के जीवन का प्रारंभिक काल-चक्र निर्धारित करता है. यह सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि जन्म का क्षण एक विशिष्ट खगोलीय विन्यास का प्रतिनिधित्व करता है, जो आगे के जीवन की संभावनाओं का संकेत देता है. इस प्रकार जन्मकालीन चन्द्र स्थिति को एक प्रारंभिक अवस्था के रूप में लिया जाता है, जिससे संपूर्ण दशा-क्रम विकसित होता है.

विंशोत्तरी दशा प्रणाली, जो इस व्यवस्था का सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत मॉडल है, समय को एक सौ बीस वर्षों के पूर्ण चक्र में विभाजित करती है. यह विभाजन नवग्रहों के बीच एक निश्चित अनुपात में किया गया है, जो इस बात को दर्शाता है कि प्रत्येक ग्रह का जीवन में एक विशिष्ट और सीमित प्रभाव-काल होता है. यह अनुपातिक विभाजन इस प्रणाली की गणितीय संरचना को स्पष्ट करता है, जहाँ प्रत्येक ग्रह को एक निश्चित अवधि प्रदान की गई है और ये सभी अवधि मिलकर एक संतुलित चक्र का निर्माण करती हैं. इस प्रणाली की विशेषता यह है कि यह समय को केवल बड़े खंडों में ही नहीं, बल्कि अत्यंत सूक्ष्म स्तर तक विभाजित करती है. महादशा के भीतर अंतर्दशा और अंतर्दशा के भीतर प्रत्यंतर दशा का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक स्तर पर वही अनुपातिक संबंध बना रहता है. इससे यह स्पष्ट होता है कि यह प्रणाली एक आवर्ती संरचना का अनुसरण करती है, जहाँ एक ही सिद्धांत विभिन्न स्तरों पर लागू होता है. यह विशेषता इसे अत्यंत परिष्कृत और वैज्ञानिक बनाती है, क्योंकि इसमें समय के विभाजन का एक सुसंगत और पुनरावृत्त नियम कार्य करता है.

अब यदि इस प्रणाली के खगोलीय आधार को और गहराई से समझा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि नक्षत्रों का चयन केवल सांकेतिक नहीं है, बल्कि यह आकाशीय पिंडों की वास्तविक स्थिति पर आधारित है. नक्षत्र स्थिर तारों के समूह हैं, जो पृथ्वी से देखने पर एक निश्चित पथ पर स्थित प्रतीत होते हैं. चन्द्रमा जब इन नक्षत्रों के मध्य से गुजरता है, तब उसकी स्थिति को मापा जाता है और उसी के आधार पर समय का निर्धारण किया जाता है. इस प्रकार यह प्रणाली एक प्रकार का खगोलीय निर्देशांक तंत्र है, जिसमें चन्द्रमा की स्थिति को संदर्भ बिंदु के रूप में उपयोग किया जाता है. महादशा का निर्धारण करते समय नक्षत्र के भीतर चन्द्रमा की स्थिति का विशेष ध्यान रखा जाता है. यदि चन्द्रमा नक्षत्र के प्रारंभ में है तो संबंधित ग्रह की पूर्ण महादशा प्राप्त होती है, और यदि वह नक्षत्र के अंत में है तो महादशा का अधिकांश भाग बीत चुका माना जाता है. यह एक स्पष्ट गणितीय अनुपात पर आधारित प्रक्रिया है, जिसमें नक्षत्र के कुल विस्तार और चन्द्रमा द्वारा पार किए गए भाग के अनुपात से शेष महादशा का निर्धारण किया जाता है. इस प्रकार यह प्रणाली ज्यामितीय और गणितीय सिद्धांतों पर आधारित है. इस सम्पूर्ण व्यवस्था का दार्शनिक आधार यह है कि समय एक सतत प्रवाह नहीं, बल्कि चक्रों में विभाजित एक संरचित प्रणाली है, जिसमें प्रत्येक चक्र का अपना विशिष्ट प्रभाव होता है. महादशा को एक व्यापक काल-चक्र के रूप में देखा जाता है, जो जीवन के प्रमुख विषयों को प्रभावित करता है, जबकि अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा इन प्रभावों को सूक्ष्म स्तर पर प्रकट करती हैं. इस प्रकार यह प्रणाली समय को विभिन्न स्तरों पर समझने का एक माध्यम प्रदान करती है.

वैदिक ज्योतिष की यह काल-विभाजन प्रणाली केवल सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि यह दीर्घकालीन अनुभव और प्रेक्षण पर आधारित है. प्राचीन ज्योतिषाचार्यों ने विभिन्न व्यक्तियों के जीवन और उनके अनुभवों का अध्ययन करके यह देखा कि ग्रहों के काल-क्रम और जीवन की घटनाओं के बीच एक निश्चित प्रकार का संबंध पाया जाता है.

रामनवमी पूजा विधि, जानें संपूर्ण नियम

भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव यानी रामनवमी हिंदू धर्म का बेहद पवित्र पर्व माना जाता है. इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की विधि-विधान से पूजा करने से जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है. आइए जानते हैं रामनवमी की संपूर्ण पूजा विधि, सामग्री और जरूरी नियम.

पूजा से पहले तैयारी- रामनवमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और साफ-सुथरे या पीले रंग के वस्त्र धारण करें. घर के मंदिर की साफ-सफाई करें और एक चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाकर भगवान श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की मूर्ति या तस्वीर स्थापित करें.

पूजा सामग्री- पूजा के लिए रोली, चंदन, अक्षत, फूल, तुलसी दल, धूप, दीप, फल, मिठाई (खीर या पंचामृत), गंगाजल और नारियल रखें. तुलसी के पत्ते भगवान राम को अति प्रिय होते हैं, इसलिए इसे जरूर अर्पित करें.

पूजा विधि- सबसे पहले दीपक जलाकर भगवान का ध्यान करें और व्रत का संकल्प लें. इसके बाद भगवान श्रीराम को जल अर्पित करें, चंदन-तिलक लगाएं और अक्षत व फूल चढ़ाएं. फिर तुलसी दल अर्पित करें और धूप-दीप जलाकर आरती करें. रामनवमी के दिन राम जन्म का समय दोपहर में माना जाता है, इसलिए मध्याह्न काल में विशेष पूजा की जाती है. इस समय भगवान श्रीराम का अभिषेक करें और ' श्री रामाय नमः' मंत्र का जाप करें. इसके बाद रामचरितमानस या सुंदरकांड का पाठ करना अत्यंत शुभ माना जाता है.

भोग और प्रसाद- भगवान श्रीराम को खीर, फल, पंचामृत और गुड़ से बने प्रसाद का भोग लगाएं. ध्यान रखें कि प्रसाद शुद्ध और सात्विक होना चाहिए. लहसुन-प्याज का प्रयोग न करें.

विशेष महत्व

मान्यता है कि रामनवमी के दिन विधिपूर्वक पूजा करने से जीवन की सभी बाधाएं दूर होती हैं और घर में सुख-शांति बनी रहती है. इस दिन दान-पुण्य का भी विशेष महत्व है, इसलिए गरीबों और जरूरतमंदों को भोजन या वस्त्र दान करना चाहिए. सच्चे मन और श्रद्धा से की गई भगवान श्रीराम की पूजा हर मनोकामना को पूर्ण करने वाली मानी जाती है.

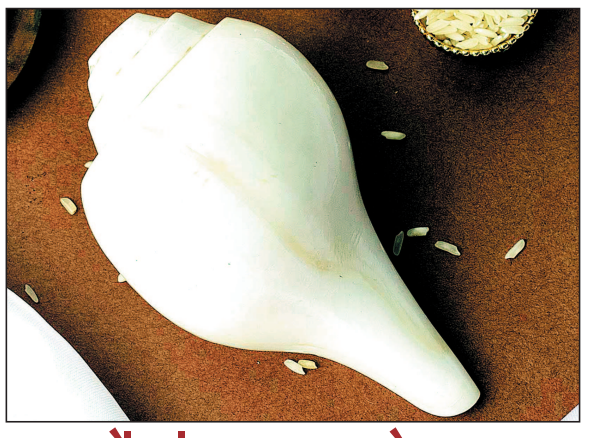

घर में शंख रखना बेहद शुभ

हिंदू धर्म और वास्तु शास्त्र में शंख को अत्यंत पवित्र और शुभ माना गया है. मान्यता है कि घर में शंख रखने और नियमित रूप से बजाने से न केवल सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, बल्कि नकारात्मक शक्तियां भी दूर हो जाती हैं. यही वजह है कि अधिकांश घरों में पूजा के समय शंख का उपयोग किया जाता है. शंख को माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु से भी जोड़ा जाता है, इसे घर में रखने से धन, सुख और समृद्धि का आगमन होता है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार शंख समुद्र मंथन के दौरान प्राप्त 14 रत्नों में से एक है, जो इसे और भी विशेष बनाता है. शंख को भगवान विष्णु का प्रिय माना जाता है और उनकी तस्वीरों में भी शंख धारण करते हुए दिखाया जाता है. ऐसे में घर के पूजा स्थल में शंख रखना बेहद शुभ माना जाता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार शंख रखने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है. शंख की ध्वनि वातावरण को शुद्ध करती है और आसपास मौजूद नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने में मदद करती है. यही कारण है कि पूजा के समय शंख बजाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है.

शंख रखने की सही दिशा का भी विशेष महत्व है. इसे हमेशा घर के मंदिर या उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में रखना चाहिए. यह दिशा देवताओं की मानी जाती है और यहां रखी गई धार्मिक वस्तुएं अधिक प्रभावशाली मानी जाती हैं. शंख को कभी भी जमीन पर सीधे नहीं रखना चाहिए, बल्कि इसे साफ कपड़े या आसन पर रखना चाहिए. शंख के भी कई प्रकार होते हैं, जिनमें दक्षिणावर्ती शंख को सबसे ज्यादा शुभ माना जाता है. यह दुर्लभ होता है और इसे घर में रखने से मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है.

घर में कपूर जलाने के चमत्कारी फायदे

ज्योतिष और वास्तु शास्त्र में कपूर को बेहद चमत्कारी और पवित्र माना गया है. पूजा-पाठ के दौरान कपूर जलाने की परंपरा सदियों पुरानी है, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि यह सिर्फ धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि घर की नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने का एक प्रभावी उपाय भी है. मान्यता है कि नियमित रूप से कपूर जलाने से घर का वातावरण शुद्ध होता है और जीवन में सुख-शांति व समृद्धि का आगमन होता है .ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कपूर जलाने से वातावरण में मौजूद नकारात्मक शक्तियां नष्ट हो जाती हैं. इसकी सुगंध और धुआं घर के हर कोने तक पहुंचकर ऊर्जा को शुद्ध करता है. यही कारण है कि शाम के समय घर में कपूर जलाना विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है. वास्तु के मुताबिक, यदि घर में बार-बार तनाव, झगड़े या मानसिक अशांति बनी रहती है, तो कपूर जलाना एक सरल और प्रभावी उपाय है. इसे रोज सुबह और शाम घर के मंदिर या मुख्य स्थान पर जलाने से सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सामंजस्य बना रहता है.

आर्थिक दृष्टि से भी कपूर को लाभकारी माना गया है. मान्यता है कि रात के समय चांदी या पीतल के बर्तन में कपूर और लौंग जलाने से धन संबंधी परेशानियां धीरे-धीरे दूर होने लगती हैं. इससे घर में लक्ष्मी का वास होता है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है. इसके अलावा, अगर घर में वास्तु दोष हो और उसे तुरंत ठीक करना संभव न हो, तो कपूर एक आसान उपाय बन सकता है.

किचन की दिशा सही रखें, आएगी सुख-समृद्धि

गलत दिशा से बढ़ती है नकारात्मकता

किचन के लिए सबसे शुभ दिशा दक्षिण-पूर्व यानी अग्नि कोण मानी गई है. यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है और किचन में अग्नि का ही प्रमुख उपयोग होता है, इसलिए इस दिशा में रसोई बनाना सबसे उत्तम माना जाता है. अगर किसी कारणवश इस दिशा में किचन बनाना संभव न हो, तो उत्तर-पश्चिम दिशा को दूसरा विकल्प माना जाता है.

घर बनाते समय किचन की दिशा का चयन केवल सुविधा का विषय नहीं होता, बल्कि इसका सीधा संबंध घर की सुख-समृद्धि और स्वास्थ्य से भी जुड़ा माना जाता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार यदि रसोई सही दिशा में बनाई जाए तो घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहता है, वहीं गलत दिशा में बना किचन कई समस्याओं को जन्म दे सकता है. ऐसे में यह जानना बेहद जरूरी है कि किचन किस दिशा में बनाना शुभ माना जाता है और किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

वास्तु शास्त्र के अनुसार किचन के लिए सबसे शुभ दिशा दक्षिण-पूर्व यानी अग्नि कोण मानी गई है. यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है और किचन में अग्नि का ही प्रमुख उपयोग होता है, इसलिए इस दिशा में रसोई बनाना सबसे उत्तम माना जाता है. अगर किसी कारणवश इस दिशा में किचन बनाना संभव न हो, तो उत्तर-पश्चिम दिशा को दूसरा विकल्प माना जाता है. हालांकि उत्तर-पूर्व दिशा में किचन बनाना पूरी तरह से वर्जित माना गया है, क्योंकि यह दिशा पूजा और आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए होती है.

किचन के अंदर भी कई नियम बताए गए हैं, जिनका पालन करना जरूरी होता है. गैस चूल्हा हमेशा इस तरह रखना चाहिए कि खाना बनाते समय व्यक्ति का मुख पूर्व दिशा की ओर हो. इसे बेहद शुभ माना जाता है और इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है. वहीं सिंक या पानी की व्यवस्था उत्तर या उत्तर-पूर्व दिशा में होना बेहतर माना जाता है, क्योंकि पानी और अग्नि तत्व को अलग-अलग रखना जरूरी होता है.

इसके अलावा, किचन में भारी सामान जैसे फ्रिज, स्टोर कैबिनेट आदि दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखना उचित माना गया है. खिड़की और वेंटिलेशन की व्यवस्था पूर्व दिशा में होनी चाहिए, ताकि सूर्य की रोशनी और ताजी हवा किचन में प्रवेश कर सके. इससे न केवल वातावरण शुद्ध रहता है, बल्कि स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार सही दिशा और नियमों का पालन करते हुए बनाया गया किचन न केवल घर की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि परिवार के स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि का भी आधार बनता है. इसलिए घर बनाते समय या किचन में बदलाव करते समय इन बातों का ध्यान रखना बेहद आवश्यक है.

रंगों की बात करें तो किचन में हल्के और आकर्षक रंगों का उपयोग करना चाहिए. खासकर पीला, नारंगी और हल्का लाल रंग शुभ माने जाते हैं, क्योंकि ये अग्नि तत्व को मजबूत करते हैं. काले और गहरे रंगों का प्रयोग कम से कम करना चाहिए, क्योंकि ये नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ा सकते हैं.

वास्तु के अनुसार कुछ गलतियों से भी बचना जरूरी है. जैसे किचन के ठीक सामने या पास में बाथरूम नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ता है. इसके अलावा किचन में टूटे-फूटे बर्तन या खराब उपकरण नहीं रखने चाहिए, क्योंकि ये आर्थिक और मानसिक परेशानी का कारण बन सकते हैं. किचन में हमेशा साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए. गंदगी और अव्यवस्था से घर में नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है.

दिनांक- 22 से 28 मार्च 2026 तक

राशिफल

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति : इस सप्ताह सूर्य मीन राशि में, मंगल कुम्भ राशि में, बुध कुम्भ राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मीन राशि में ता. 25 को 3/57 रात से मेष राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मेष वृषभ मिथुन और कर्क राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव : ता. 26 को अश्विनी मेषे शुक्र गेहूं, जौ, चना, चावल, बाजरा, घी में तेजी, गुड, खाण्ड, शक्कर, पाट, बारदाना में घट-बढ के बाद तेजी, सोना, चांदी में अच्छी तेजी, तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्ड, में साधारण मंदी करता है. ता. 28 को अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, मोती, चांदी, सोना, कपास, गेहूं, जौ, चना, चावल, अफीम में उतार-चढाव के बाद तेजी आयेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	22 मार्च को	विनायकी गणेश चतुर्थी व्रत,
सोमवार	23 मार्च को	श्रीपंचमीं, श्रीराम राज्य महोत्सव, मीनावतार
मंगलवार	24 मार्च को	सूर्य षष्ठी, स्कंध षष्ठी, अशोका षष्ठी,
बुधवार	25 मार्च को	महानिशा पूजा,
गुरूवार	26 मार्च को	श्री दुर्गाष्टमीं व्रत, महाष्टमीं, अशोकाष्टमीं, महा नवमीं,
शुक्रवार	27 मार्च को	श्रीराम नवमीं व्रत, जवारे विसर्जन,
शनिवार	28 मार्च को	धर्मराज जयंती,

मेष

इस सप्ताह आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा, आस पड़ोस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, धार्मिक यात्रा होगी, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार में विस्तार की संभावना बरती हैं, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग रहेगा.

वृषभ

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा, आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, अपनी उदारता पर अंकुश रखा तो राहत मिलेगी, कार्यक्षेत्र प्रभावित होगा, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा, धार्मिक यात्रा होगी, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी.

मिथुन

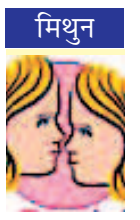

इस सप्ताह परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहींसमझें, बल्कि वह प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे, परिश्रम अधिक करना होगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

कर्क

इस सप्ताह आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना होगा, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

सिंह

इस सप्ताह पहले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यों में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफलता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना होगा, जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी, भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापर्टी से अच्छा लाभ मिलेगा.

कन्या

इस सप्ताह कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यों को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि रहेगी.

तुला

इस सप्ताह यदि अस्वस्थ्य हैं, और कमजोरी है, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पडेगा, अनुभवों का लाभ होगा.

वृश्चिक

इस सप्ताह आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जड़े लोग बेहतर प्रदर्शन करें, सफलता मिलेगी, घरेलू आयोजन आनन्दमय रहेगा, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षाएं बढ़ेगी, माता पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

धनु

इस सप्ताह अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों केकारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी,पुरानी गलती को भूलकर आगे बढ़े, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करें, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

मकर

इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीद सकते हैं, अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले विचार अवश्य करना चाहिये.

कुम्भ

इस सप्ताह प्रापर्टी के बारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरूआत कर सकते हैं, अपने व्यवहार और आत्म विश्वास का प्रयोग कार्यक्षेत्र मेंकरेंगे, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा सकते हैं, सप्ताह के शुरूआत में आप भ्रमण की स्थिति मेंरहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे, वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे.

मीन

इस सप्ताह आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानवाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा. अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.